B.Ed.part =1,paper 1,Topic - Process of Education,
Presented by Dr.Pallavi

शिक्षा की प्रक्रिया (Process of Education)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

प्रस्तुत अध्याय में हम शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यमों का अध्ययन करेंगे। इस पाठ के द्वारा विस्तारपूर्वक शिक्षा के द्विध्रुवीय, त्रिध्रुवीय, बहुध्रुवीय प्रक्रियाओं को जानेंगे । जव शिक्षा को द्विध्रुवीय कहा गया, तो शिक्षा को शिक्षक तथा शिष्य के मध्य होनेवाली प्रक्रिया माना जाता रहा है। त्रिध्रुवीय प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षक, शिक्षार्थी के मध्य समाज की जरूरतों को ध्यान में रखकर होने वाली प्रक्रिया कहते हैं। इसी प्रकार, बहुध्रुवीय प्रक्रिया में औपचारिक तथाअनौपचारिक शिक्षा के माध्यमों को रखा गया और जीवनपर्यंत होने वाली प्रक्रिया के तहत शिक्षा गर्भ से लेकर मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया को माना जा रहा है

2.2 शिक्षा : एक प्रक्रिया (Education : A Process)

पिछले अध्याय में आपने पढ़ा कि शिक्षा किस प्रकार बच्चों के जन्मजात गुणों को विद्यालयी शिक्षा द्वारा विकसित करती है। शिक्षा न केवल व्यक्तित्व के विकास में योगदान देती है, बल्कि सामाजिक मूल्यों तथा आवश्यकताओं की भी पूर्ति करती है। यानि "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक तथा सामंजस्यपूर्ण विकास में योग देती है तथा उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है एवं उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है। यह उसके व्यवहार, विचार, दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होती है।" उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि शिक्षा एक प्रक्रिया है।

उपयुक्त शिक्षा संबंधी विचारों को देखने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है

1. शिक्षा एक विचार (Deliberate) प्रक्रिया है।
2. यह प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण है।
3. यह उद्देश्य परिवर्तन तथा विकास से सम्बन्धित है।
4. शिक्षा सीखने तथा सीखने की प्रक्रिया है।
5. शिक्षा की यह प्रक्रिया जब औपचारिक दृष्टि से छात्र तथा अध्यापक के बीच चलती है तो उसे द्विमुखी प्रक्रिया कहते हैं।
6. परन्तु जब छात्र तथा अध्यापक के साथ सामाजिक शक्तियों को जोड़ दिया जाता है, तब इसे त्रिमुखी प्रक्रिया माना जाता है।

2.2.1 शिक्षा के अंग (Parts of Education) उपरोक्त प्रक्रियाओं पर ध्यान दें, तो शिक्षा-शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत शिक्षा के तीन अंग दिखाई देते हैं, वे हैं-(1) शिक्षक , (2) बालक तथा (3) पाठ्यक्रम । शिक्षाविद् जॉन डिवी (John Dewey) ने इसे सही माना है। अब हम, शिक्षा के प्रक्रियाओं पर अलग-अलग प्रकाश डालें

2.3 शिक्षा : द्विमुखी प्रक्रिया (Education : Bi-polar Process) सर्वप्रथम एडम्स (Adams) ने कहा कि "शिक्षा द्विमुखी प्रक्रिया है।" (Education is a bi-polar Process) एडम्स के अनुसार, "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करके उसके व्यवहार को विकसित और परिवर्तित करता है।

आधुनिक काल में रॉस ने भी शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया मानते हुए लिखा है "चुम्बक के समान शिक्षा में भी दो ध्रुवों का होना आवश्यक है इसलिए यह द्विध्रुवीय अथवा द्विमुखो प्रक्रिया है।"(like a magnet Education must have two poles, it is a bipolar process. ")
द्विमुखी प्रक्रिया में एक ध्रुव पर शिक्षक तथा दूसरे पर शिष्य होता है ।

शिक्षा के दौरान दोनों का कार्य समान महत्व का होता है । एक सिखाता है एवं दूसरा सीखता है । एक पढाता है, तो दूसरा पढ़ता है। शिक्षक पथ-प्रदर्शक का काम करता है तो शिष्य अनुगमन करता है । उनके कार्यों में अंतर्संबंध होता है। ये आपसी सहयोग से निर्धारित लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए दोनों में अंतर होना चाहिए। इसके बिना शिक्षा देने तथा लेने का कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है।

इस प्रकार शिक्षा एक चेतना और विचारपूर्ण प्रक्रिया (Conscious and Deliberate Process) प्रक्रिया में कर्ता और कर्म का संबंध (Subject-Object Relationship) होता है।

## 2,4 शिक्षा त्रिध्रुवीय प्रक्रिया (Education : Tripolar Process)

जॉन डिवी ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया न मानकर त्रिमुखी प्रक्रिया माना है अर्थात् शिक्षा के तीन अंग हैं (1) शिक्षक, (2) शिक्षार्थी तथा (3) समाज। इन तीनों श्रुवों को चित्र 2.2 में देखा जा सकता है।

शिक्षा की प्रक्रिया में इन तीनों तत्वों की पारस्परिक क्रिया निहित है। शिक्षार्थी या बालक जिसे शिक्षित किया जाता है, शिक्षक या अध्यापक जो बच्चे की शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करता है एवं सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करता है तथा सामाजिक परिदृश्य या सामाजिक-सास्कृतिक प्रभाव तथा शक्तियों; जिनके अंतर्गत शैक्षिक प्रक्रिया चलती रहती है ।

समाज अथवा सामाजिक शक्तियां शिक्षक तथा शिष्य को विषय-सामग्री को हम विस्तृत अर्थ में पाठ्यक्रम कहते है ।

सामाजिक तत्व पर बल देते हुए ने कहा है कि बालक को उस समाज में रहना है, जिसका वह सदस्य है। उसका विकास समाज में रहकर, समाज के द्वारा ही हो सकता है। अतः शिक्षा देने के क्रम में सामाजिक तत्वों, सामाजिक कुशलताओ तथा समाज द्वारा मानकीकृत आचरण का विकास किया जाता है। इसी प्रक्रिया में उनका (शिक्षार्थी) समाजीकरण (Socialization) होता है और वे सामाजिक प्राणी बनते हैं। अत: "सामाजिक तत्व " शिक्षा प्रक्रिया का आवश्यक अंग है।

## 2.5 शिक्षा बहुमुखी प्रक्रिया (Education Multi-Polar Power)

शिक्षा की आधुनिक अवधारणा ने लोकतंत्रीय वातावरण में स्वतः सीखने पर बल दिया जाता है। इस अवधारणा के अनुसार विद्यालय तथा शिक्षक के एकाधिकार को समाप्त करने पर बल दिया गया है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विद्यालय के अलावा अनौपचारिक (Informal) तथा गैर-औपचारिक (Non-formal) साधनों के द्वारा शिक्षा प्रदान करने स्वीकारा गया है । आधुनिक समाज शिक्षा तथा शिक्षण-सामग्री बहुमुखी माध्यम यथा, सॉफ्टवेयर, NET, रेडियो, समाचार - पत्रों ,पत्रो आदि के माध्यम से प्रकट किया जा रहा है ।आज शिक्षा को खुला, स्वतंत्र तथा लचीला माना रहा है।
इस दृष्टिकोण देखा जाए शिक्षा द्विमुखी त्रिमुखी होकर बहुमुखी बन गई है; जिसमें तकनीक के विभिन्न साधन व्यक्ति को शिक्षित करने अपना-अपना योगदान दे रहा हैं।

## 2.6 शिक्षा : जीवन पर्यंत प्रक्रिया (Education: Life Long Process)

शिक्षा द्वारा मनुष्य की सभ्यता एवं संस्कृति में लगातार विकास होता है। शिक्षा के द्वारा एक पीढ़ों का ज्ञान दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित होता है। शिक्षा के स्थानान्तरण के लिए समाज विद्यालय का सहारा लेता है ।एक विशेष काल की विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ सब निश्चित होते हैं। समाज में परिवर्तन के साथ ये सभी कारक बदलते रहते हैं। समाज की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा के दौरान शिक्षण विधियाँ (Teaching Method), पाठ्यचर्या (Curriculum) एवं उद्देश्यों (Aims Objectives) में बदलाव किए जाते रहे हैं।

व्यापक अर्थ में शिक्षा जन्म से मृत्यु तक शिक्षा के अन्तर्गत ज्ञान, अनुभव, कौशल तथा अभिवृत्ति सभी कुछ आते हैं। इस प्रकार जीवन के सभी अनुभव स्वतः शैक्षिक क्रिया का एक अंग बन जाता है। शिक्षा की प्रक्रिया वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों ही अवस्थाओं में चलती रहती है । शिक्षा के इस अर्थ में उन सभी मूल्यों, अभिवृत्तियों तथा कौशलों को, जिन्हें समाज बच्चों में डालना चाहता है, विकसित करने संबंधी सभी प्रयोग सम्मिलित हैं।

इस प्रकार, शिक्षा जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।

## 2.7 शिक्षा के अंग (Parts of Education)

हमने शिक्षा की प्रक्रिया के दौरान शिक्षा के तीनों अंगों को जाना । अब विस्तार से इन अंगों पर प्रकाश डालेंगे।

(1) शिक्षक (The Teacher)-प्राचीन युग में शिक्षक का शिक्षा में स्थान मुख्य था और बालक का गौण । कालांतर में शिक्षा पर बहुत से प्रयोग हुए जिसके परिणामस्वरूप शिक्षाविद् इस नतीजे पर पहुँचे कि शिक्षा-व्यवस्था शिक्षार्थी (Learner) के अनुरूप होना चाहिए। अतः वर्तमान में, शिक्षा में बालक का स्थान मुख्य हो गया तथा शिक्षक का स्थान गौण हो गया। इसके बावजूद, वर्तमान में शिक्षक का उत्तरदायित्व पहले से बहुत ज्यादा बढ़ गया है। आज शिक्षक शिक्षा-जगत का ना सिर्फ महत्त्वपूर्ण अंग है बल्कि, सम्पूर्ण वातावरण का निर्माता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक के दो कार्य हैं-(I) वातावरण का महत्त्वपूर्ण अंग होने के नाते वह अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है तथा ( 2) । कालांतर में शिक्षा पर बहुत से प्रयोग हुए जिसके परिणामस्वरूप शिक्षाविद् इस नतीजे पर पहुँचे कि शिक्षा-व्यवस्था शिक्षार्थी (Learner) के अनुरूप होना चाहिए अत: वर्तमान में, शिक्षा में बालक का स्थान मुख्य हो गया तथा शिक्षक का स्थान गौण हो गया इसके बावजूद, वर्तमान में शिक्षक का उत्तरदायित्व पहले से बहुत ज्यादा बढ़ गया है। आज शिक्षकबालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है तथा (2) वातावरण का निर्माता होने के नाते, उसे ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना पड़ता है, जिनमें रहते हुए बालक उन क्रियाशीलनों (Skills) तथा अनुभवों का ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा उनके उपयोग से अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। तभी बालक समाज में सही समायोजन कर सकेगा तथा एक सुखी सम्पन्न जीवनयापन कर सकेगा। इसके अलावा, शिक्षा के एक मुख्य उद्देश्य बालक का चरित्र का निर्माण करना भी है। इस क्रिया में शिक्षक के चरित्र का बालक पर विशेष प्रभाव पड़ता है । बच्चे शिक्षक के व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं तथा उसका अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। अत: शिक्षक बालक के सम्पूर्ण विकास में अपना अहम योगदान देता है।

(2) छात्र (The Learner)-शिक्षा जगत् का खास महत्त्वपूर्ण कार्य बालक के लिए ही होता है। उसके मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक जरूरतों को पूरा करने के दृष्टिकोण से सारी शिक्षा व्यवस्था के अभिक्रमित किया जाता है। आज की शिक्षा-व्यवस्था बालक केन्द्रित (Child Centric) है। इस मत क सर्वप्रथम प्रतिपादन एडम्स ने किया था। उसने कहा कि यदि हम यह कहें कि शिक्षक जॉन को लैटिन पढाता है।" तो इसमें शिक्षक तथा लैटिन से ज्यादा आवश्यक 'जॉन' यानि बालक है। इस बात से स्पष्ट है कि शिक्ष के क्षेत्र में बालक का स्थान मुख्य

है। यही कारण है कि वर्त्तमान में सभी शिक्षाशास्त्री बालक को सच्चे अर्थ में शिक्षित करने पर बल देते हैं। शिक्षा का समस्त कार्य बालक की रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं त आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए । यही कारण है कि आधुनिक युग में पाठ्यक्रम, पाठ्य-विषय त पाठ्य-पुस्तक, को बाल केन्द्रित हो गई है। इन बातों के आकलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि क भी शिक्षक अपने कार्य में उस समय तक सफल नहीं हो सकता, जब तक उसे बालक के स्वभाव का पूरा ज्ञान न हो । वस्तुतः, आज भी हम योग्य शिक्षक उसी व्यक्ति को कह सकते हैं, जिसे अपने विषय के साथ-स बाल मनोविज्ञान का भी ज्ञान हो ।

(3) पाठ्यक्रम (Curriculum)-शिक्षा-शिक्षण की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षण-अधिगम (Teaching-Leaming) प्रक्रिया का आधार है। यह शिक्षक तथा विद्यार्थी की सीमाओं को निश्चित करके, शिक्षा की समस्त योजना को शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार संचालित करता है। अगर हम संकुचित अर्थ में पाठ्यक्रम को समझे, सो पाते हैं कि कुछ विषयों तथा सीमित तथ्यों का अध्ययन करना है । परन्तु, व्यापक (Wider) अर्थ में पाठ्यक्रम समस्त अनुभवों का वह योग है, जिसे बालक विद्यालय परिसर में सीखता है इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-सहगामी क्रियायें (Curriculum and Co-curricular Activities) आती है। ये क्रियायें शिक्षक तथा पत्नी मिलकर करते हैं। वस्तुतः पाठ्यक्रम का निर्माण देश, काल तथा समाज की आवश्यकताओं एवं प्रचलित विचारधाराओं के अनुसार होता है। वैसे एकतंत्रवादी समाज का पाठ्यक्रम भिन्न तथा जनतंत्रवादी समाज (Democratic Society) का पाठ्यक्रम भिन्न है। पाठ्यक्रम का निर्माण देश, काल तथा समाज की आवश्यकताओं एवं प्रचलित विचारधाराओं के अनुसार होता है। अत: एकतंत्रवादी समाज का पाठ्यक्रम जनतंत्रवादी समाज से बिल्कुल भिन्न होता है। एकतंत्रवादी समाज के पाठ्यक्रम का निर्माण व्यक्ति को अपेक्षा, समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। यह सभी के लिए एक समान तथा सबके लिए समान है। जबकि, जनतंत्र में व्यक्ति की स्वतत्रता को स्वीकार किया जाता है। अतः जनतंत्रीय समाज के पाठ्यक्रम में लचीलापन, अनुकूलन तथा स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया जाता है।

शिक्षा के उपरोक्त अंगों के अलावा समाज भी एक महत्त्वपूर्ण घटक है। शिक्षक, विद्यार्थी तथा पाठ्यक्रम, यह भी समाज ही निर्धारित करता है।

## 2.8 सारांश (Summary)

इस पाठ में हमलोगों ने शिक्षा की प्रक्रिया का गहन रूप से अध्ययन किया बच्चों के गुण या क्षमताओं को उनके वैयक्तिक विकास तथा सामाजिक आवश्यकताओं तथा मूल्यों को विकसित करने के लिए शिक्षा प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया गया है । जिसमें सर्वप्रथम शिक्षा को द्विध्रुवीय, त्रिध्रुवीय, बहुध्रुवीय तत्पश्चात् जोवनपर्यंत चल वाली प्रक्रिया के रूप में माना है। इसके अलावा, शिक्षा के महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में शिक्षक, बालक तथा पाठ्यक्रम को भी जाना ।

## 2.9 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. शिक्षा एक द्विध्रुवीय अथवा ध्रुवीय प्रक्रिया है ? व्याख्या करें ।
(Educational process is bipolar or tripolar ? Explain it.)

2. शिक्षा बहुधा अथवा जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। वर्णन करें।
(Education is Multi-polar or life long process. Describe it.)